देह-व्यापार से जुड़ी महिलाओं के बच्चों की शिक्षा का अध्ययन

श्यामदास गोंड*
शिरीष पाल सिंह**

यह शोध पत्र, शोध अध्ययन “देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में विभिन्न कारकों की भूमिका के अध्ययन पर आधारित है, जो वर्ष 2020 में किया गया था। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता पर उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना था। प्रतिदर्श चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का उपयोग करते हुए न्यादर्श के रूप में नागपुर जनपद के देह-व्यापार में संलिप्त 40 महिलाओं एवं अनुग्रह बाल विकास केंद्र (गैर-सरकारी संगठन) में अध्ययनरत उनके माध्यमिक स्तर के 40 बच्चों का चयन किया गया था। इस शोध में वर्णनात्मक शोध के सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था। शोध में आँकड़ों के संकलन के लिए अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया था। प्रतिगमन सांख्यिकी गणना द्वारा परिणाम प्राप्त किए गए तथा ज्ञात हुआ कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है अर्थात् ये बच्चे अकादमिक लक्ष्य हासिल करने की ऊँची आकांक्षा रखते हैं तथा इनकी अकादमिक प्रभावशीलता पर इनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शिक्षा वह जल है जो बंजर भूमि को भी उपजाऊ बनाने की क्षमता रखता है। यही शिक्षा मानव को पशु समाज से भिन्न करती हुई उसके व्यक्तित्व को आलोकित करती है, जिसके औपचारिक और अनौपचारिक रूपी परिधि में रहकर बालक का सर्वांगीण विकास होता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शिक्षा की अपनी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा ने हमेशा व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण किया है। शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण

करना नहीं होता है, बल्कि शिक्षा का उद्देश्य नये ज्ञान को सीखने के साथ-साथ अपने स्वयं के अनुभव में वृद्धि करना होता है।

प्राचीन भारत में शास्त्रों के अनुसार नारी पूजनीय है एवं इसमें ईश्वरीय वास होता है। जिस परिवार में इसका तिरस्कार किया जाता है, वहाँ पर ईश्वरीय वास नहीं होता है। साथ ही उस परिवार में किए गए शुभ कार्य सफल नहीं होते हैं। भारतीय संविधान के अनुसार भारतीय नागरिकों को अनुच्छेद 19-22

* शोधार्थी, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

** एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

के अंतर्गत स्वतंत्रता संबंधी अधिकार प्राप्त हैं, जिसमें 19(ब) के अनुसार उन्हें स्वेच्छा से कोई भी व्यवसाय अपनाने की स्वतंत्रता प्राप्त है, तो भारतीय महिलाओं (देह-व्यापार में संलिप्त महिलाएँ) को अपनी इच्छानुसार व्यवसाय अपनाने मात्र से घृणित कैसे समझा जा सकता है? साथ ही साथ इनके बच्चे समाज की मुख्यधारा के विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने के अवसर की समानता से अभी तक क्यों वंचित हैं?

वर्तमान समय में देह-व्यापार देश के प्रत्येक राज्य में किसी न किसी इलाके में अपना पैर पसार चुके हैं। जहाँ लाखों महिलाएँ दुनिया से कटकर बेबस जिंदगी जी रही हैं। ऐसी बहुत ही कम महिलाएँ होती हैं जो अपनी इच्छा से देह-व्यापार के धंधे में आती हैं। ज्यादातर महिलाएँ ऐसी होती हैं, जिनके सामने या तो कोई मजबूरी होती है या अनजाने में इन्हें बदनाम बाजारों में बेच दिया जाता है। भारत में देह-व्यापार का चलन आज से नहीं, बल्कि सदियों से चला आ रहा है। प्रजापति (2013) ने अपने लेख 'वेश्यावृत्ति और कानून' में बताया है कि वेश्यावृत्ति सभी सभ्य देशों में आदिकाल से विद्यमान है। देह-व्यापार क्या है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके जवाब के संदर्भ में लोगों का क्यास (अनुमान) एक जैसा ही होता है, लेकिन यह एक ऐसा प्रश्न है जो अपने अंदर कई प्रश्नों को समेटे हुए है। इस संदर्भ में गाथिया, जे. (2002) ने अपनी पुस्तक, *एशिया में देह-व्यापार दासता का आधुनिक मायाजाल* में इन प्रश्नों को जलकुम्भी के समान बताया है। उनका मानना है कि ये प्रश्न जितने आसान लगते हैं, उतने हैं नहीं, क्योंकि इस जलकुम्भी की जड़ें हमारे समाज की रचना में धंसी हुई हैं और संस्कृति की शुरुआत

के साथ ही इसके अंकुर फूटे हैं। विजय श्री, पी. (2010) ने *देवदासी या धार्मिक वेश्या* नामक अपनी कृति में बताया है कि धार्मिक वेश्यावृत्ति का सांस्कृतिक वर्चस्व और जाति आधारित सामंती अर्थव्यवस्था से गहरा संबंध है। स्थानीय पुजारियों के धार्मिक स्वीकृति एवं दबंग सामंती तबके के कारण तात्कालीन युवतियाँ देह-व्यापार करने के लिए मजबूर थीं।

देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों से संबंधित साहित्य, लेख, शोध पुस्तकों तथा समाचार पत्रों की समीक्षा करने पर शोधार्थी ने पाया कि देह-व्यापार से जुड़े विभिन्न तथ्य या घटनाएँ ऐसे प्राप्त हुए जो नारकीय जीवन को प्रदर्शित करते हैं। सामाजिक दृष्टिकोण की यदि बात की जाए तो ज्ञात होता है कि समाज में लोग इन्हें और इनके बच्चों को घृणा के भाव से देखते हैं। इनका समाज में कोई अस्तित्व नहीं है। राउत (2009) ने अपने शोध अध्ययन "देह-व्यापार करने वाली महिलाओं की वास्तविक स्थिति के एक अध्ययन" में पाया कि इन महिलाओं के अपने बच्चों के प्रति भी कुछ सपने होते हैं। इनके भी अरमान होते हैं कि मेरे बच्चे भी पढ़-लिखकर स्वयं की उन्नति करें। शेटी तथा अन्य (2017) अपने लेख "महिला यौन कर्मियों के बच्चों की स्थिति और कमजोरियों की रूपरेखा पर एक अध्ययन रिपोर्ट" में बताते हैं कि यौनकर्मियों के बच्चे उन परिस्थितियों में रहते हैं जो अत्यधिक शोषण युक्त और असुरक्षित होती हैं। गाथिया, जे. (2002) ने अपनी पुस्तक *एशिया में देह-व्यापार दासता का आधुनिक मायाजाल* में बताया है कि आंध्र प्रदेश के कुछ जिलों में जोगिन

प्रथा के अंतर्गत वहाँ की लड़कियों एवं महिलाओं का शारीरिक शोषण होता है जिससे उनका एवं उनके बच्चों का जीवन नारकीय हो गया है।

अध्ययन का औचित्य

देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं को यह वृत्ति किसी मजबूरी वश करनी पड़ती है, जिसमें परिवार की आर्थिक तंगी प्रमुख मजबूरी है। इन महिलाओं को समाज में घृणा की दृष्टि से देखा जाता है। इनके बच्चों को समाज में अवैध माना जाता है। इन बच्चों को पिता का नाम न मिल पाने के कारण समाज में इनका कोई अस्तित्व नहीं होता है। इस कारणवश भारतीय विद्यालयों में इनके बच्चों को प्रवेश पाने में कठिनाई होती है, जिसके कारण यह शिक्षा से वंचित रह जाते हैं और ये बच्चे समाज में सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत नहीं कर पाते हैं।

भारतीय संविधान के 86वें संशोधन के अंतर्गत 21(क) के अनुसार 6-14 वर्ष के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा की जो व्यवस्था की गई है, उसका कोई भी प्रत्यक्ष प्रभाव इन क्षेत्रों में दिखाई नहीं दे रहा है। निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार केवल सभ्य सामाजिक वर्गों और प्रतिष्ठावान लोगों के बच्चों तक ही सीमित हुआ प्रतीत होता है। शोधार्थी द्वारा अपने शोध विषय से संबंधित साहित्यिक समीक्षा में पाया गया कि अधिकांशतः शोध देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के स्वास्थ्य, शोषण, रहन-सहन, सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, शारीरिक स्थिति, बाल-पोषण से संबंधित है। कुछ शोध इनके बच्चों की शैक्षिक चुनौतियों, स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा से संबंधित प्राप्त हुए हैं। लेकिन शोधार्थी

के संज्ञान के अनुसार कोई भी शोध भारतीय परिस्थिति में प्राप्त नहीं हुए हैं, जिसमें देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया हो। अतः उपरोक्त चर्चा को संज्ञान में रखते हुए शोधार्थी ने यह शोध अध्ययन करने का निर्णय लिया।

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे—

1. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
2. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इस शोध अध्ययन की निम्न परिकल्पनाएँ थीं—

1. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है।
2. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है।

शोध का परिसीमन

1. इस शोध में शोधार्थी द्वारा महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के केवल इतवारी क्षेत्र को सम्मिलित किया गया था।
2. इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जिले के केवल इतवारी क्षेत्र में देह-व्यापार में संलिप्त 40 महिलाओं एवं उनके 40 बच्चों को न्यादर्श के रूप में सम्मिलित किया गया था।

शोध विधि

यह शोध अध्ययन मात्रात्मक शोध विधि पर आधारित है जिसके लिए वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया था।

जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में महाराष्ट्र राज्य के नागपुर जनपद की देह-व्यापार में संलिप्त समस्त महिलाओं एवं उनके बच्चों को सम्मिलित किया गया तथा प्रतिदर्श चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि का उपयोग किया गया प्रतिदर्श के रूप में नागपुर जनपद के इतवारी क्षेत्र में रहने वाली देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं को अभिभावक के रूप में एवं अनुग्रह बाल विकास केंद्र (गैर-सरकारी संगठन) में अध्ययनरत देह-व्यापार में संलिप्त इन्हीं महिलाओं के कक्षा 9 के 40 बच्चों (विद्यार्थियों) का चयन किया गया था।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में शोध उपकरण के रूप में शोधार्थी द्वारा पूर्वनिर्मित अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का उपयोग किया गया था।

प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधि

इस शोध कार्य में आँकड़ों के विश्लेषण इस शोध अध्ययन हेतु सांख्यिकी प्रविधि के रूप में शोधार्थी द्वारा मध्यमान, मानक विचलन, प्रतिशत सांख्यिकी प्रविधि तथा प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया था।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

1. **अकादमिक प्रभावशीलता**— अकादमिक प्रभावशीलता से तात्पर्य अकादमिक क्षेत्र में

बच्चों की रुचि एवं उसके आधार पर भविष्य में अकादमिक उन्नति के संबंध में उनके विचारों से है।

2. **अकादमिक प्रभावशीलता का पूर्वानुमान**— पूर्वानुमान का तात्पर्य किसी भी व्यक्ति अथवा कार्य के वर्तमान अध्ययन के आधार पर उसके भविष्य के संबंध में विचार प्रकट करने या कथन करने से है। इस अध्ययन में देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में पूर्व कक्षा की उपलब्धि का क्या योगदान है, इसका अध्ययन किया गया है।
3. **पूर्व कक्षा की उपलब्धि**— इस अध्ययन में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 अध्ययन सत्र (2018-19) के विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा 8 के वार्षिक परीक्षा के परीक्षाफल से है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उद्देश्यों के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से की गई है—

1. **देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करना**

इस शोध का प्रथम उद्देश्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करना था। देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता संबंधी प्रदत्तों के संकलन के लिए पूर्वनिर्मित अकादमिक प्रभावशीलता मापनी का उपयोग किया गया। जिसके लिए शोधार्थी द्वारा इस उद्देश्य की पूर्ति

हेतु संकलित आँकड़ों को एस.पी.एस.एस. में प्रविष्ट कर मध्यमान, मानक विचलन तथा विचरणशीलता गुणांक का मान ज्ञात किया गया। इसे तालिका 1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1— वर्णनात्मक सांख्यिकी (Descriptive Statistics)

	अकादमिक प्रभावशीलता
संख्या	40
मध्यमान	2.7216
मानक विचलन	0.41575
विचरणशीलता गुणांक	15.27%

तालिका 1 का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के मध्यमान का मान 2.7216, मानक विचलन का मान 0.41575 तथा विचरणशीलता गुणांक का मान 15.27 प्रतिशत है, जो तुलनात्मक रूप से कम है। मध्यमान अंक 2.72 प्रदर्शित करते हैं कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का मान उच्च है, क्योंकि इस अध्ययन में एक कथन पर अधिकतम तीन अंक की संभावना है। साथ ही विचरणशीलता गुणांक का मान 15.27 प्रतिशत है जो कि कम है। यह इस तथ्य का द्योतक है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के मानों में अंतर काफी कम है। अतः परिकल्पना “देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है” स्वीकृत होती है। अतः स्पष्ट रूप से यह कहा जा सकता है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चे भी शिक्षा के प्रति जागरूक हैं तथा वह भी शिक्षा प्राप्त

करने की आकांक्षा रखते हैं अर्थात् उनमें अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है। देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों का यह दृढ़ विश्वास है कि यदि उन्हें भी समाज की मुख्यधारा में संलग्न कर शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर प्रदान किया जाए तो वे भी अकादमिक लक्ष्य को प्राप्त कर अपने भविष्य को बेहतर बना सकेंगे।

2. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना

इस शोध का द्वितीय उद्देश्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना था। देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि संबंधी प्रदत्तों के संकलन के लिए शोधार्थी द्वारा इन बच्चों के पूर्व की कक्षाओं के अंकपत्र में प्राप्त प्रतिशत का उपयोग किया गया। इन बच्चों के अंकपत्र

तालिका 2— अवशिष्ट सांख्यिकी (Residuals Statistics)

	महालनोबिस डिस्टेंस	कुक्स डिस्टेंस
न्यूनतम	.001	.000
अधिकतम	3.528	.127
माध्य	.975	.022
मानक विचलन	.979	.029
संख्या	40	40

1. आश्रित चर—अकादमिक प्रभावशीलता

के प्रतिशत से संबंधित आँकड़ों को एस.पी. एस.एस. में प्रविष्ट किया गया। आँकड़ों का विश्लेषण करने से पूर्व प्रतिगमन विश्लेषण की अवधारणाओं की जाँच की जाना आवश्यक है जो कि तालिका 2 में प्रदर्शित की गई है।

अवधारणा का परीक्षण

देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का पूर्वानुमान उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि द्वारा किया गया है, जिसके लिए प्रत्येक चर के संदर्भ में 40 विद्यार्थियों से आँकड़े प्राप्त किए गए। इन आँकड़ों को एस.पी.एस.एस. में प्रविष्ट कर प्राप्त परिणाम को तालिका 2 में दर्शाया गया है। अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि महालनोबिस डिस्टेंस का अधिकतम मान 3.528 है जो कि $df = 1$, χ^2 (chi-square/काई वर्ग) के 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 3.841 से कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दिए गए वितरण में आउटलियर उपस्थित नहीं है।

इसी प्रकार तालिका 2 से कुक्स डिस्टेंस के अवलोकनोपरांत यह स्पष्ट होता है कि कुक्स डिस्टेंस का अधिकतम मान .127 है जो कि एक से कम है। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना दिए गए

आँकड़े में आउटलियर अनुपस्थित है, निरस्त नहीं की जा सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दिए गए वितरण में आउटलियर उपस्थित नहीं है। इस प्रकार आँकड़े रेखीय प्रतिगमन की अवधारणा को संतुष्ट करते हैं। अतः शोधार्थी द्वारा रेखीय प्रतिगमन के द्वारा आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। अन्य अवधारणाएँ जैसे न्यूनतम न्यादर्श आकार जो कि 20 होना चाहिए तथा अंतराल मापनी पर आँकड़े व्यवस्थित होने चाहिए, संतुष्ट होती है।

तालिका 3 के अवलोकनोपरांत यह ज्ञात होता है कि F का मान $df (1,38)$ पर 0.017 है, जिसकी सार्थकता (p) का मान 0.896 है, जो कि 0.05 सार्थकता स्तर के मान से अधिक है। जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि यह प्रतिगमन मॉडल आश्रित चर देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि को प्रभावित करने में सक्षम नहीं है। अतः देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है, स्वीकृत होती है। अतएव इस आधार पर हम यह कह सकते हैं कि बच्चों की अकादमिक

तालिका 3— प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)^a

	वर्गों का योग (Sum of Squares)	स्वातंत्र्य स्तर (df)	माध्य वर्ग (Mean Square)	एफ (F)	सार्थकता (Sig.)
प्रतिगमन	2.141	1	2.141	.017	.896 ^b
अवशिष्ट	4719.634	38	124.201		
योग	4721.775	39			

a. आश्रित चर—शैक्षणिक प्रभावशीलता, b. स्वतंत्र चर—(स्थिरांक), पूर्व उपलब्धि

प्रभावशीलता उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि से प्रभावित नहीं होती है। साथ ही साथ यह भी कहा जा सकता है कि किसी भी स्तर की उपलब्धि वाले बच्चे की अकादमिक प्रभावशीलता उच्च स्तर की हो सकती है।

तालिका 4 के अवलोकनोपरांत यह ज्ञात होता है कि बच्चों की पूर्व कक्षा की उपलब्धि (previous result) हेतु मानकीकृत बीटा (Beta) का संगत t-मान .131 है तथा $p = 0.896$ है जो कि 0.05 सार्थकता मान से अधिक है। जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है, निरस्त नहीं की जा सकती अर्थात् स्वीकृत होती है। अतः इससे निष्कर्ष निकलता है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इनके बच्चों के उस दृढ़ आत्म-विश्वास जिसके द्वारा वह अकादमिक लक्ष्य

की प्राप्ति करना चाहते हैं, उसमें उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि अर्थात् शैक्षिक गतिविधियों, शैक्षिक मूल्यों एवं शैक्षिक परिवेश का कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 5 के अवलोकनोपरांत यह ज्ञात हुआ कि स्वतंत्र चर के रूप में देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की पूर्व कक्षा की उपलब्धि और आश्रित चर के रूप में बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता में सह-संबंध गुणांक 0.021 है। R^2 (आर वर्ग) का मान 0 है जो यह दर्शाता है कि शैक्षणिक (अकादमिक) प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की पूर्व कक्षा की उपलब्धि का योगदान नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है, निरस्त नहीं की जा सकती। अतः इससे निष्कर्ष निकलता है कि बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है। अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि देह-व्यापार में संलिप्त

तालिका 4—सहगुणांक (Coefficients)^a

	अमानकीकृत गुणांक (Unstandardised Coefficients)		मानकीकृत गुणांक (Standardised Coefficients)	संगत टी-मान (Compatible t-value)	सार्थकता (Sig.)
	बी (B)	मानक त्रुटि (Std. Error)	बीटा (Beta)		
स्थिरांक	75.764	30.976	-	2.446	.019
पूर्व उपलब्धि	.082	.624	.021	.131	.896

a. आश्रित चर— शैक्षणिक प्रभावशीलता

**तालिका 5— प्रतिमान सारांश
(Model Summary)^b**

प्रतिमान (Model)	1
आर (R)	.021 ^a
आर वर्ग (R Square)	.000
समायोजित आर वर्ग (Adjusted R Square)	-.026
अनुमान की मानक त्रुटि (Std. Error of the Estimate)	11.145

a. स्वतंत्र चर— (स्थिरांक), पूर्व उपलब्धि

b. आश्रित चर— शैक्षणिक प्रभावशीलता

**तालिका 6— वर्णनात्मक सांख्यिकी
(Descriptive Statistics)**

	माध्य (Mean)	मानक विचलन (Std. Deviation)	मानक विचलन (Std. Deviation)
अकादमिक प्रभावशीलता (Y)	79.83	11.003	40
पूर्व उपलब्धि (X)	49.5283	2.85799	40

महिलाओं के बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में उन्नति या प्रगति करने अथवा आकांक्षा अनुरूप शैक्षिक उपलब्धि हासिल करने के दृढ़ आत्मविश्वास पर इनके बच्चों द्वारा पूर्व कक्षा में सीखे गए अकादमिक ज्ञान का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोधार्थी द्वारा तालिका 5 से R और तालिका 6 से मानक विचलनों के मान प्राप्त किए गए। तालिका 6 में आश्रित चर बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता को Y तथा स्वतंत्र चर बच्चों की पूर्व कक्षा की उपलब्धि को X से प्रदर्शित किया गया है। तालिका 6 के अवलोकनोपरांत यह स्पष्ट होता है कि मानक विचलन Y का मान 11.003 तथा मानक विचलन X का मान 2.85799 है। तालिका 5 तथा तालिका 6 से प्राप्त मान प्रतिगमन गुणांक b के समीकरण $.021(11.003 \div 2.85799)$ में रखने पर 0.08 मान प्राप्त हुआ। जिसका तात्पर्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि में एक इकाई की वृद्धि से देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता में 0.08 इकाई की वृद्धि

से है। शोधार्थी द्वारा तालिका 6 से Y (79.83) और X (49.5283) मध्यमान के मान को a (स्थिरांक) के सूत्र में प्रतिस्थापित कर स्थिरांक का मान ज्ञात किया गया जो Y अक्ष पर कटान बिंदु दर्शाता है। इस प्रकार, प्रतिगमन रेखा का समीकरण है, $Y = 0.08X + 75.87$ होगा।

शोध निष्कर्ष

इस शोध अध्ययन में शोध निष्कर्ष के रूप में निम्नलिखित तथ्य प्राप्त हुए हैं—

1. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है अर्थात् इन महिलाओं के बच्चों को यह दृढ़ विश्वास है कि वह एक अकादमिक लक्ष्य अर्जित कर सकते हैं।
2. देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है। इससे तात्पर्य है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों द्वारा अकादमिक लक्ष्य प्राप्त करने अथवा इस संदर्भ में चिंतन करने में इनके द्वारा प्राप्त पूर्व कक्षा की

उपलब्धि (ज्ञान और कौशल) अर्थात् शैक्षिक क्रियाओं का कोई सार्थक योगदान नहीं है।

विवेचना

उद्देश्य अनुसार प्राप्त निष्कर्षों की विवेचना निम्न प्रकार है—

- इस शोध का प्रथम उद्देश्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता का स्तर उच्च है अर्थात् इन महिलाओं के बच्चे शिक्षा के प्रति सजग एवं जागरूक हैं तथा अकादमिक लक्ष्य प्राप्त करने की आकांक्षा रखते हैं। साथ ही साथ इन्हें यह दृढ़ आत्मविश्वास है कि यदि इन्हें समाज की मुख्यधारा के अन्य बच्चों की तरह शिक्षा प्राप्त करने का सुअवसर मिले तो वे अपने वर्तमान और भविष्य को उज्ज्वल बना सकते हैं।
- इस शोध का द्वितीय उद्देश्य देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्व कथन में उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य से संबंधित आँकड़ों के सांख्यिकी विश्लेषण के उपरान्त यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता पर उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है अर्थात् देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता उनकी पूर्व कक्षा की उपलब्धि से प्रभावित नहीं होती

है। अतः स्पष्ट है कि देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चे पूर्व कक्षा की उपलब्धि से लाभान्वित एवं अभिप्रेरित नहीं होते हैं तथा इनके द्वारा अकादमिक लक्ष्य हासिल करने के दृढ़ विश्वास में उनकी पूर्व कक्षा के मूल्यांकन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध कार्य में देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की अकादमिक प्रभावशीलता के पूर्वानुमान में पूर्व कक्षा की उपलब्धि के योगदान का अध्ययन किया गया है। प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों के आधार पर यह शोध कार्य शैक्षिक व सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है, जिसकी सहायता से शिक्षक, शिक्षार्थी, अभिभावक एवं नीति-निर्माता निश्चित तौर पर भविष्य में लाभान्वित हो सकेंगे। शिक्षकों के विशेष संदर्भ में शैक्षिक निहितार्थ का निरूपण करते हुए यह कहा जा सकता है कि यह शोध शिक्षकों को देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की मनःस्थिति को समझने, उन्हें सामाजिक एवं मानसिक दक्षता के गुणों को विकसित करने वाली गतिविधियों व कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के लिए अभिप्रेरित करने, उनके अभिभावकों को शैक्षिक उपलब्धि में परिवार की भूमिका के महत्व को समझाने, पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में अपेक्षाकृत सुधार करने तथा उन्हें भविष्य में उच्च शिक्षा प्राप्त करने एवं शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता कर सकेंगे। विद्यार्थियों के विशेष संदर्भ में शैक्षिक निहितार्थ का निरूपण करते हुए यह कहा जा सकता है कि इस शोध के द्वारा विद्यार्थी अपने पूर्व कक्षा की उपलब्धि के अवलोकन के आधार पर अमुक विषय की कमजोरियों को

पहचान कर उसका समाधान कर सकेंगे। साथ ही साथ विद्यार्थी पूर्व कक्षा के शिक्षण-अधिगम पर विशेष ध्यान दे सकेंगे। इस शोध अध्ययन के आलोक से वंचित वर्गों के अभिभावक अपने समुदाय के बच्चों के शैक्षिक हित के लिए तात्कालिक सरकार से शैक्षिक नीतियों को निर्मित कर उसे क्रियान्वित करने की माँग कर सकेंगे तथा बच्चों के सर्वांगीण

विकास में शिक्षा के महत्व एवं भूमिका से अवगत होकर, उनके अनुरूप पारिवारिक वातावरण निर्मित कर सकेंगे। इस शोध अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं परिणामों के आलोक में नीति-निर्माता देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों की शैक्षिक समस्याओं से अवगत होकर, उसके निराकरण से संबंधित नीतियाँ निर्मित कर सकेंगे।

संदर्भ

- गाथिया, जे. 2002. एशिया में देह-व्यापार दासता का आधुनिक मायाजाल. कंसेप्ट पब्लिशिंग कंपनी प्रा. लि.
 प्रजापति, ए. आर. 2013. सामुदायिक वेश्यावृत्ति एवं रेत. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
 राउत, ए. आर. 2009. देह-व्यापार करने वाली महिलाओं की वास्तविक स्थिति— एक अध्ययन. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.
 विजय, श्री.पी. 2010. देवदासी या धार्मिक वेश्या— एक पुनर्विचार. वाणी प्रकाशन, दिल्ली.
 शेड्डी, बी. और वी. मालवे. 2017. महिला यौनकर्मियों के बच्चों की स्थिति और कमजोरियाँ— एक अध्ययन रिपोर्ट. के.एच. पी.टी. पब्लिशर्स, बेंगलुरु.